Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2026, E-Journal, Vol. I, Issue LIII (53), ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

# उद्यमिता एवं स्टार्टअप का उच्च शिक्षा में समावेश

**डॉ. रागिनी सिकरवार***

* सहायक प्राध्यापक, शासकीय शासकीय गृहविज्ञान स्नातकोत्तर अग्रणी महाविद्यालय, नर्मदापुरम (म.प्र.) भारत

**शोध सारांश –** पिछले कुछ वर्षों में देश में स्टार्टअप का शोर बहुत बढ़ा है। अखबारों में, टेलीविजन पर और सोशल मीडिया पर हर तरफ किसी न किसी नए स्टार्टअप की कहानी सुनाई देती है। लेकिन जब हम यह सोचते हैं कि ये उद्यमी कहाँ से आते हैं, तो जवाब अक्सर यही होता है कि वे कॉलेज और विश्वविद्यालयों से निकले हुए युवा हैं। तब सवाल उठता है कृ क्या हमारे उच्च शिक्षण संस्थान वाकई उद्यमिता की भावना को पोषित कर रहे हैं? क्या पाठ्यक्रम में ऐसा कुछ है जो एक विद्यार्थी को नौकरी ढूँढने की बजाय नौकरी देने वाला बनाने के लिए प्रेरित करे?

यह शोध पत्र इन्हीं सवालों के जवाब तलाशने की एक कोशिश है। इसमें भारत के विभिन्न राज्यों के 22 उच्च शिक्षण संस्थानों के 480 से अधिक छात्रों, शिक्षकों और उद्यमिता प्रकोष्ठ के प्रभारियों से बातचीत और सर्वेक्षण के जरिए आँकड़े जुटाए गए। निष्कर्षों से यह सामने आया कि जहाँ कुछ संस्थानों में उद्यमिता शिक्षा ने सकारात्मक परिणाम दिए हैं, वहीं अधिकांश संस्थानों में यह अभी भी केवल कागजों तक सीमित है।

**शब्द कुंजी –** उद्यमिता शिक्षा, स्टार्टअप इकोसिस्टम, इनक्यूबेशन सेंटर, नवाचार, उच्च शिक्षा, स्टार्टअप इंडिया, NEP 2020, युवा उद्यमी।

**प्रस्तावना –** भारत आज वैश्विक मंच पर एक बड़ी आर्थिक शक्ति के रूप में उभरा है, और इसका सबसे बड़ा प्रमाण हमारा स्टार्टअप इकोसिस्टम है। सरकारी आंकड़ों पर यदि गौर करें, तो वर्ष 2024 तक हमारे देश में एक लाख से अधिक मान्यता प्राप्त स्टार्टअप्स अपनी जड़ें जमा चुके हैं। सौ से अधिक ऐसी कंपनियाँ हैं जिन्हें हम श्यूनिकॉर्नश के नाम से जानते हैं, जिनकी वैल्यूएशन एक अरब डॉलर के पार पहुँच चुकी है। फ्लिपकार्ट, ओला, जोमैटो और पेटीएम जैसे नाम आज किसी किताबी उदाहरण की तरह नहीं, बल्कि उस भारतीय युवा शक्ति के जीवंत प्रतीक हैं जिन्होंने अपने सपनों और अटूट मेहनत से जीरो से शुरुआत करके आसमान छुआ है। ये कंपनियाँ केवल व्यापारिक सफलता नहीं, बल्कि एक नए भारत के आत्मविश्वास की कहानी कहती हैं।

हालाँकि, इस सफलता की चमक के पीछे एक कड़वा सच भी छिपा है। यदि हम अपनी कुल युवा आबादी और हर साल कॉलेजों से डिग्री लेकर निकलने वाले करोड़ों युवाओं की ओर देखें, तो सफल उद्यमियों की यह संख्या बहुत छोटी नजर आती है। एक गंभीर रिपोर्ट के अनुसार, भारत में हर साल लगभग डेढ़ करोड़ युवा काम की तलाश में बाजार में कदम रखते हैं, लेकिन अर्थव्यवस्था में उनके लिए उपलब्ध पर्याप्त अवसरों की भारी कमी है। डिग्री तो सबके पास है, लेकिन उन डिग्रियों के साथ रोजगार की गारंटी नहीं है। इस विकट स्थिति से निपटने का एक ही प्रभावी और टिकाऊ मार्ग हैकृउद्यमिता। जब युवा केवल श्नौकरी मांगने वालेश न रहकर श्नौकरी देने वालेश बनेंगे, तभी भारत सही मायनों में आत्मनिर्भर बनेगा।

इस बदलाव की आवश्यकता को समझते हुए, भारत सरकार की 'राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020' (NEP 2020) ने एक दूरदर्शी कदम उठाया है। इस नीति का मूल दर्शन यह है कि हमारे उच्च शिक्षण संस्थान केवल डिग्री बाँटने की फैक्ट्रियां बनकर न रह जाएँ। शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य छात्रों में उद्यमशीलता, रचनात्मकता, नवाचार और अनिश्चितताओं के बीच जोखिम उठाने की अद्भुत क्षमता विकसित करना होना चाहिए। इसे धरातल पर उतारने के लिए सरकार ने 'स्टार्टअप इंडिया' और 'अटल इनोवेशन मिशन' जैसे बड़े अभियान चलाए हैं, ताकि कॉलेजों के भीतर से ही नवाचार के बीज अंकुरित हो सकें और छात्र अपने विचारों को एक सफल व्यवसाय का रूप दे सकें।

इन्हीं संभावनाओं और चुनौतियों को ध्यान में रखते हुए, यह शोध पत्र अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाता है। आज के उच्च शिक्षण संस्थानों में उद्यमिता शिक्षाका वर्तमान स्वरूप क्या है? क्या इसे केवल पाठ्यक्रम में एक विषय के रूप में शामिल किया गया है या वाकई छात्रों के भीतर व्यावहारिक कौशल विकसित किया जा रहा है? क्या हमारे कॉलेज छात्रों को एक सफल व्यवसायी बनने के लिए जरूरी संसाधन और मार्गदर्शन प्रदान कर रहे हैं? इसी केंद्रीय प्रश्न का उत्तर तलाशना इस शोध का मुख्य लक्ष्य है, ताकि हम यह समझ सकें कि क्या हम अपने युवाओं को वास्तव में भविष्य के उद्यमी के रूप में तैयार कर पा रहे हैं या नहीं।

**साहित्य समीक्षा**

उद्यमिता शिक्षा पर देश-विदेश में काफी लिखा गया है। अलग-अलग शोधकर्ताओं ने इस विषय को अलग-अलग कोणों से देखा है। यहाँ हम कुछ महत्वपूर्ण शोधों का संक्षेप में उल्लेख करते हैं।

**वैश्विक संदर्भ**

Kuratako (2005) ने अमेरिकी विश्वविद्यालयों में उद्यमिता शिक्षा के इतिहास और विकास का अध्ययन करते हुए बताया कि 1970 के दशक में जहाँ केवल कुछ ही विश्वविद्यालयों में उद्यमिता के कोर्स थे, वहीं 2005 तक यह संख्या दो हजार से अधिक हो गई थी। उन्होंने यह भी कहा कि उद्यमिता एक ऐसा कौशल है जिसे सिखाया जा सकता है, यह केवल जन्मजात प्रतिभा पर निर्भर नहीं करता।

Gibb (2002) ने कहा कि पारंपरिक शिक्षा प्रणाली एक 'निर्भरता की

संस्कृतिश बनाती है जहाँ छात्र आदेशों का पालन करना सीखते हैं। इसके विपरीत, उद्यमिता शिक्षा एक 'स्वायत्तता की संस्कृति' बनाती है जहाँ छात्र खुद सोचते हैं, खुद फैसला लेते हैं और खुद जिम्मेदारी उठाते हैं। Fayolle और Gailly (2008) ने यूरोपीय विश्वविद्यालयों में उद्यमिता शिक्षा के प्रभाव का मूल्यांकन करते हुए पाया कि जिन छात्रों ने उद्यमिता कोर्स किया था, उनमें व्यवसाय शुरू करने का इरादा उन छात्रों की तुलना में तीन गुना अधिक था जिन्होंने ऐसा कोई कोर्स नहीं किया था।

**भारतीय संदर्भ –** भारत में इस विषय पर हुए शोधों की बात करें तो Bhat और Raina (2019) ने IIM और IIT जैसे प्रतिष्ठित संस्थानों में उद्यमिता पाठ्यक्रम का अध्ययन किया। उन्होंने पाया कि इन संस्थानों में इनक्यूबेशन सेंटर और मेंटरशिप प्रोग्राम्स की वजह से छात्रों में स्टार्टअप शुरू करने की प्रवृत्ति काफी अधिक है। हालाँकि उन्होंने यह भी बताया कि ये सुविधाएँ केवल देश के कुछ चुनिंदा संस्थानों तक ही सीमित हैं।

Sharma और Madan (2022) ने राज्य विश्वविद्यालयों के 500 छात्रों पर किए अपने अध्ययन में पाया कि 74% छात्र उद्यमिता में रुचि रखते थे लेकिन उनमें से केवल 12% को ही अपने संस्थान से इस दिशा में किसी तरह का व्यावहारिक मार्गदर्शन मिला था।Sinha (2021) ने Startup India के तहत हुई प्रगति का विश्लेषण किया और निष्कर्ष निकाला कि सरकारी नीतियाँ तो अच्छी हैं लेकिन उनका जमीनी स्तर पर क्रियान्वयन अभी भी कमजोर है।

इन सभी अध्ययनों को देखने से एक बात साफ होती है – उद्यमिता शिक्षा की जरूरत तो सभी महसूस करते हैं, लेकिन इसे व्यावहारिक और प्रभावी रूप से लागू करने में अभी लंबा रास्ता तय करना है।

**शोध की आवश्यकता एवं उद्देश्य –** भारत में उच्च शिक्षा और उद्यमिता के बीच की खाई पर हिन्दी में बहुत कम शोध उपलब्ध है। अधिकांश शोध या तो अंग्रेजी में है या फिर IIM-IIT जैसे प्रीमियम संस्थानों पर केंद्रित है। सामान्य राज्य विश्वविद्यालयों, डिग्री कॉलेजों और ग्रामीण क्षेत्रों के संस्थानों की स्थिति और वहाँ के छात्रों के अनुभवों पर ध्यान कम गया है। इस कमी को ध्यान में रखते हुए यह शोध किया गया।

इस शोध के मुख्य उद्देश्य इस प्रकार हैं – पहला, यह जानना कि उच्च शिक्षण संस्थानों में उद्यमिता शिक्षा की वर्तमान स्थिति क्या है। दूसरा, यह समझना कि NEP 2020 और Startup India जैसी नीतियों का जमीनी असर कितना हुआ है। तीसरा, उन कारणों की पहचान करना जो छात्रों को उद्यमिता की तरफ जाने से रोकते हैं। चौथा, यह पता लगाना कि किन संस्थानों के मॉडल सफल रहे हैं और उनसे क्या सीखा जा सकता है। पाँचवाँ, नीति निर्माताओं और संस्थान प्रमुखों के लिए कुछ ठोस और व्यावहारिक सुझाव तैयार करना।

**शोध विधि –** इस शोध में मिश्रित शोध पद्धति का उपयोग किया गया है। यह तरीका इसलिए चुना गया क्योंकि उद्यमिता जैसे विषय में केवल संख्याएँ काफी नहीं होतीं कृ इंसानों के डर, उनकी उम्मीदें और उनके अनुभव भी उतने ही जरूरी हैं।

**प्रतिदर्श चयन–** शोध के लिए देश के 8 राज्यों उत्तर प्रदेश, बिहार, मध्य प्रदेश, राजस्थान, महाराष्ट्र, तमिलनाडु, पश्चिम बंगाल और गुजरात के 22 उच्च शिक्षण संस्थानों का चयन किया गया। इनमें 6 केंद्रीय विश्वविद्यालय, 10 राज्य विश्वविद्यालय और 6 निजी विश्वविद्यालय शामिल थे। कुल 480 प्रतिभागियों से आँकड़े जुटाए गए 350 स्नातक एवं स्नातकोत्तर छात्र, 95 शिक्षक और 35 eCell प्रभारी तथा प्रशासनिक अधिकारी।

**डेटा संग्रह –** तीन तरीकों से डेटा जुटाया गया। पहला, लिकर्ट स्केल आधारित प्रश्नावली जो ऑनलाइन और ऑफलाइन दोनों माध्यमों से भरवाई गई। दूसरा, फोकस ग्रुप डिस्कशन (FGD) 8 संस्थानों में 6–8 छात्रों के छोटे समूहों के साथ। तीसरा, गहन व्यक्तिगत साक्षात्कार 28 सफल छात्र उद्यमियों और 14 शिक्षकों के साथ।

**डेटा विश्लेषण –** मात्रात्मक डेटा के लिए SPSS 26.0 का उपयोग किया गया और वर्णनात्मक सांख्यिकी, क्राई–स्क्वायर परीक्षण तथा रिग्रेशन विश्लेषण की सहायता ली गई। गुणात्मक डेटा के लिए Nvivo सॉफ्टवेयर की मदद से विषयगत विश्लेषण (Thematic Analysis) किया गया।

**उद्यमिता शिक्षा अर्थ और आवश्यकता –** 'उद्यमिता शिक्षा' से मतलब यह नहीं है कि छात्रों को केवल व्यवसाय शुरू करना सिखाया जाए। इसका दायरा बहुत व्यापक है। इसमें समस्याओं को पहचानना, समाधान सोचना, जोखिम का मूल्यांकन करना, टीम बनाना, संसाधन जुटाना और असफलता से न डरना ये सब शामिल हैं। दरअसल, उद्यमिता एक सोचने का तरीका है, एक जीवनदृष्टि है।

आज के समय में सिर्फ इसलिए नहीं कि 'नौकरी नहीं मिलती', बल्कि इसलिए भी उद्यमिता जरूरी है क्योंकि दुनिया तेजी से बदल रही है। Automation और AI की वजह से कई पुरानी नौकरियाँ खत्म हो रही हैं। ऐसे में जो छात्र केवल नौकरी पाने की तैयारी करते हैं, वे भविष्य में पिछड़ सकते हैं। जो छात्र नई चीजें बनाना जानते हैं, नई समस्याओं का हल ढूँढते हैं कृ वही आगे बढ़ेंगे।

Peter Drucker ने कहा था 'Innovation is the specific instrument of entrepreneurship.' मतलब, नवाचार ही उद्यमिता का असली हथियार है। और नवाचार की भावना को जगाने का सबसे अच्छा समय वह होता है जब व्यक्ति पढ़ रहा हो, जब उसका मन खुला हो और वह नई चीजें सीखने के लिए तैयार हो।

**भारत में उद्यमिता शिक्षा की वर्तमान स्थिति**

**सरकारी प्रयास और नीतियाँ –** भारत सरकार ने उद्यमिता को बढ़ावा देने के लिए कई महत्वपूर्ण कदम उठाए हैं। 2016 में शुरू हुई 'Startup India' योजना के तहत स्टार्टअप के लिए कर छूट, सरल पंजीकरण और फंडिंग सहायता दी जाती है। 'Atal Innovation Mission' के तहत देश भर के स्कूलों और कॉलेजों में 'Atal Incubation Centres' खोले गए हैं। UGC और AICTE ने भी अपने पाठ्यक्रम दिशानिर्देशों में उद्यमिता को अनिवार्य या वैकल्पिक विषय के रूप में शामिल करने की बात कही है।

NEP 2020 की बात करें तो इसमें 'Experiential Learning', 'Critical Thinking' और 'Vocational Education' पर विशेष बल दिया गया है और ये तीनों उद्यमिता शिक्षा के स्तंभ हैं। नीति में यह भी कहा गया है कि हर उच्च शिक्षण संस्थान में एक 'Technology Business Incubator' होना चाहिए।

**संस्थानों की जमीनी हकीकत –** सरकारी नीतियाँ बहुत अच्छी हैं, लेकिन जमीन पर क्या हो रहा है? हमारे सर्वेक्षण में कुछ चौंकाने वाले तथ्य सामने आए। शोध में शामिल 22 संस्थानों में से केवल 9 संस्थानों में कार्यरत उद्यमिता प्रकोष्ठ (E-Cell) था। बाकी 13 में या तो E-Cell था ही नहीं या था तो केवल नाम के लिए, जिसकी कोई नियमित गतिविधि नहीं थी।

केवल 4 संस्थानों में एक सक्रिय इनक्यूबेशन सेंटर था जहाँ छात्रों को अपना आइडिया विकसित करने के लिए जगह, मेंटरशिप और कुछ फंडिंग सहायता मिलती थी। 350 में से केवल 89 छात्रों (यानी लगभग 25%) ने कहा कि उनके संस्थान में उद्यमिता से जुड़ा कोई कोर्स या कार्यशाला नियमित रूप से होती है।

यह आँकड़े बताते हैं कि कागज पर जो दिखता है और जमीन पर जो होता है, उनके बीच अभी बड़ा अंतर है।

**सफल मॉडल कुछ उदाहरण –** हालाँकि निराशाजनक तस्वीर के बावजूद कुछ उदाहरण प्रेरणादायक हैं। IIT बॉम्बे का 'SINE' (Society for Innovation and Entrepreneurship) और IIM अहमदाबाद का CIIE देश के सबसे सफल academic incubators में से हैं। इनसे सैकड़ों सफल स्टार्टअप निकले हैं।

लेकिन इससे भी ज्यादा दिलचस्प उदाहरण हैं छोटे शहरों के। बिहार के मुजफ्फरपुर में एक राज्य विश्वविद्यालय ने जब 'युवा उद्यमिता क्लब' शुरू किया और स्थानीय उद्योगपतियों को मेंटर के रूप में जोड़ा, तो दो साल में 18 छात्र उद्यमी तैयार हुए जो आज छोटे पर टिकाऊ व्यवसाय चला रहे हैं। यह उदाहरण बताता है कि बड़े संसाधन न हों तो भी इच्छाशक्ति और सही दिशा से बड़ा काम हो सकता है।

**उद्यमिता पाठ्यक्रम का स्वरूप क्या पढ़ाया जाए?** यह सवाल बहुत जरूरी है कि उद्यमिता शिक्षा में आखिर क्या–क्या होना चाहिए। कई विश्वविद्यालयों में 'Entrepreneurship' नाम का एक विषय तो जोड़ दिया गया है, लेकिन उसमें भी वही पुराना रटना–लिखना चलता है परिभाषाएँ, सिद्धांत और प्रश्नोत्तर। इससे उद्यमिता की भावना नहीं जागती।

**व्यावहारिक और अनुभव–आधारित शिक्षा –** सबसे पहली जरूरत है कि उद्यमिता की कक्षा 'करके सीखने' पर आधारित हो। इसमें व्यवसाय योजना प्रतियोगिता हो, लाइव प्रोजेक्ट्स हों जहाँ छात्र किसी असली समस्या का समाधान ढूँढें, बाजार सर्वेक्षण करें, प्रोटोटाइप बनाएँ और उसे लोगों के सामने रखें। स्टैनफोर्ड यूनिवर्सिटी के 'd.School' का Design Thinking Model इसका एक बेहतरीन उदाहरण है जिसे कई भारतीय संस्थान अब अपना रहे हैं।

**मार्गदर्शन और उद्योग से जुड़ाव –** किताबी ज्ञान से उद्यमी नहीं बनता। जरूरी है कि छात्रों को उन लोगों से मिलवाया जाए जिन्होंने खुद व्यवसाय खड़े किए हैं उनकी सफलता की कहानियाँ भी और उनकी असफलता की कहानियाँ भी। उद्योग सलाहकार को नियमित रूप से कक्षाओं में बुलाना, क्षेत्रीय दौरे, इंटर्नशिप और वास्तविक केस स्टडी ये सब मिलकर छात्रों को असली दुनिया की समझ देते हैं।

हमारे सर्वेक्षण में 81% शिक्षकों ने माना कि Industry-Academia Connect की भारी कमी है। वे खुद भी इससे परेशान हैं लेकिन संस्थागत बाधाएँ इसे आगे नहीं बढ़ने देतीं।

**असफलता की स्वीकृति –** भारतीय समाज में असफलता को बहुत नकारात्मक दृष्टि से देखा जाता है। एक बार बिजनेस फेल होने पर व्यक्ति को 'हारा हुआ' माना जाता है। यह मानसिकता उद्यमिता की सबसे बड़ी दुश्मन है।Silicon Valley की सफलता का एक बड़ा राज यह है कि वहाँ असफलता को सीखने का हिस्सा माना जाता है।

हमारे फोकस ग्रुप में एक छात्र ने कहा, 'मैं बिजनेस करना चाहता हूँ लेकिन घर वाले नहीं मानते। वे कहते हैं पहले नौकरी करो, फिर देखेंगे। उन्हें डर है कि अगर फेल हुए तो सब लोग क्या कहेंगे।' यह सिर्फ उस एक छात्र की कहानी नहीं है यह लाखों भारतीय युवाओं की कहानी है। उद्यमिता शिक्षा को इस सामाजिक मानसिकता को बदलने की भी कोशिश करनी चाहिए।

**शोध के प्रमुख निष्कर्ष**

**मात्रात्मक निष्कर्ष –** सर्वेक्षण में शामिल 76% छात्रों ने कहा कि वे भविष्य में अपना व्यवसाय शुरू करने में रुचि रखते हैं। यह एक उत्साहजनक आँकड़ा है। लेकिन जब यह पूछा गया कि क्या आपके संस्थान ने आपको इसके लिए तैयार किया है, तो केवल 23% ने 'हाँ' में जवाब दिया। यानी रुचि है लेकिन तैयारी नहीं हो रही।

68% छात्रों ने माना कि उन्हें वित्तपोषण, कानूनी प्रक्रिया और बाजार अनुसंधान जैसी बुनियादी बातों की जानकारी नहीं है। 59% ने कहा कि उन्हें किसी ऐसे उपदेशक की जरूरत है जो उनका हाथ पकड़कर शुरुआत करने में मदद करे। 72% शिक्षकों ने स्वीकार किया कि उनके पाठ्यक्रम में उद्यमिता का व्यावहारिक पहलू बहुत कम है।

**गुणात्मक निष्कर्ष –** साक्षात्कारों से कुछ बहुत महत्वपूर्ण बातें उभरीं। एक सफल छात्र उद्यमी जो राजस्थान के एक सामान्य कॉलेज से पढ़े थे और आज एक जैविक खेती स्टार्टअप चला रहे हैं, उन्होंने बताया, 'मेरे कॉलेज ने मुझे कुछ नहीं सिखाया। मैंने यूट्यूब, पॉडकास्ट और एक स्थानीय मार्गदर्शक की मदद से खुद सब सीखा। लेकिन अगर कॉलेज में कोई प्लैटफॉर्म होता तो मेरी यात्रा और आसान होती और शायद तीन साल पहले ही मैं यहाँ पहुँच जाता।'

एक अन्य साक्षात्कार में एक महिला उद्यमी ने बताया कि उनके घर और समाज की तरफ से शुरू में बहुत विरोध था। लेकिन जब उनके विश्वविद्यालय के E-Cell ने उनके प्रोजेक्ट को एक राष्ट्रीय प्रतियोगिता में भेजा और उन्होंने पुरस्कार जीता, तो घर वालों की सोच बदली और उन्हें Support मिलने लगा। यह उदाहरण बताता है कि संस्थागत Recognition कितनी बड़ी भूमिका निभाती है।

एक वाणिज्य विभाग के शिक्षक ने बताया, 'हम खुद Business Theory पढ़ाते हैं लेकिन हमने खुद कभी बिजनेस नहीं किया। तो हम छात्रों को उद्यमिता का असली जज्बा कैसे दें? हमें भी Industry Exposure चाहिए।' यह एक बड़ी और ईमानदार बात थी।

**चुनौतियाँ**

**संरचनात्मक बाधाएँ –** उच्च शिक्षण संस्थानों की मौजूदा संरचना ही उद्यमिता शिक्षा के लिए अनुकूल नहीं है।Semester System में सब कुछ एक तय समयसीमा में होता है। परीक्षाएँ रटने की क्षमता मापती हैं। Grades का दबाव होता है। ऐसे माहौल में एक छात्र जो अपना Startup India Develop करने में समय दे रहा हो, उसे अक्सर 'पढ़ाई से भटका हुआ' माना जाता है।

**वित्तीय बाधाएँ –** एक बड़ी समस्या यह है कि स्टार्टअप शुरू करने के लिए पैसा चाहिए और अधिकतर छात्रों के पास वह नहीं होता। बैंक भी बिना Guarentee के युवा उद्यमियों को Loan नहीं देते। उद्यम पूंजी और दूत निवेशकों की पहुँच भी अभी दिल्ली, मुंबई, बेंगलुरु जैसे बड़े शहरों तक ही सीमित है। छोटे शहरों और गाँवों के छात्रों के लिए यह एक बड़ी दीवार है।

**सामाजिक और पारिवारिक दबाव –** जैसा पहले भी जिक्र हुआ, भारतीय परिवारों में 'Self Career' की सोच बहुत गहरी है। सरकारी नौकरी या बड़ी Company में Job यही लक्ष्य अधिकतर माता–पिता का होता है। इस

माहौल में एक युवा के लिए 'सब छोड़कर कुछ नया करना' बहुत कठिन होता है। उद्यमिता शिक्षा को इस सामाजिक चुनौती को भी संबोधित करना होगा।

**शिक्षकों की सीमित तैयारी–** जो शिक्षक उद्यमिता पढ़ाते हैं, उनमें से अधिकतर ने खुद कभी कोई व्यवसाय नहीं किया। वे किताबी ज्ञान तो दे सकते हैं, लेकिन असली अनुभव और जुनून नहीं। यह एक संरचनात्मक समस्या है जिसका हल केवल शिक्षकों को दोष देने से नहीं होगा बल्कि उनके लिए भी उद्योग अनुभव कार्यक्रम और अवकाश जैसे प्रावधान करने होंगे।

**सुझाव और सिफारिशें –** इस शोध के आधार पर हम कुछ ठोस सुझाव देना चाहते हैं जो नीति निर्माताओं, संस्थान प्रमुखों और शिक्षकों के लिए उपयोगी हो सकते हैं।

- पहला सुझाव यह है कि उद्यमिता को केवल एक विषय नहीं बल्कि एक 'मानसिकता' के रूप में पाठ्यक्रम में शामिल किया जाए। हर विभाग कृ चाहे विज्ञान हो, कला हो या वाणिज्य में उद्यमिता से जुड़े तत्व होने चाहिए।
- दूसरा सुझाव है कि हर उच्च शिक्षण संस्थान में एक कार्यात्मक E-Cell और Incubation Centre हो जिसके लिए अलग से बजट आवंटित हो। यह केवल कागजों पर नहीं बल्कि वास्तव में काम करे।
- तीसरा सुझाव यह है कि स्थानीय उद्योगपतियों, सफल उद्यमियों और NGO प्रमुखों को 'विजिटिंग मेंटर' के रूप में संस्थाओं से जोड़ा जाए। इसके लिए UGC और AICTE एक राष्ट्रीय मेंटरशिप डेटाबेस बनाएँ।
- चौथा सुझाव है कि छात्र उद्यमियों को Semester में थोड़ी नम्यताढी जाए। अगर कोई छात्र अपना Startup Develop कर रहा है तो उसे अतिरिक्त क्रेडिट मिलें, न कि उपस्थिति की चिंता हो।
- पाँचवाँ सुझाव यह है कि माता–पिता को भी इस प्रक्रिया में शामिल किया जाए। अभिभावक अभिविन्यास कार्यक्रम में उद्यमिता के फायदे और संभावनाएँ बताई जाएँ ताकि घर का माहौल भी सहायक बने।
- छठा सुझाव है कि हिन्दी और अन्य भारतीय भाषाओं में उद्यमिता की पाठ्य सामग्री, केस स्टडी और सफलता की कहानियां तैयार की जाएँ ताकि इस ज्ञान तक उन छात्रों की भी पहुँच हो जो अंग्रेजी में सहज नहीं हैं।

**निष्कर्ष –** उद्यमिता एवं स्टार्टअप का उच्च शिक्षा में समावेश आज की सबसे बड़ी जरूरतों में से एक है। बेरोजगारी, असमानता और तकनीकी बदलाव इन तीनों चुनौतियों का जवाब उद्यमिता की भावना में छुपा है। जब एक युवा नौकरी माँगने की जगह नौकरी देने की सोचता है, तो वह केवल खुद के लिए नहीं बल्कि पूरे समाज के लिए कुछ करता है।

यह शोध यह साबित करता है कि रुचि और क्षमता हमारे युवाओं में भरपूर है। कमी है तो सिर्फ सही मार्गदर्शन, सही माहौल और सही नीतियों के क्रियान्वयन की। जिन संस्थानों ने इस दिशा में ईमानदारी से काम किया है, वहाँ के नतीजे प्रेरणादायक हैं।

हमें यह भी याद रखना होगा कि हर छात्र उद्यमी नहीं बनेगा और यह जरूरी भी नहीं है। लेकिन उद्यमिता शिक्षा जो सोचने का तरीका विकसित करती है problem-solving, creativity, resilience वह हर क्षेत्र में काम आता है। चाहे कोई डॉक्टर हो, वकील हो, शिक्षक हो या कलाकार उद्यमी सोच हर काम को बेहतर बनाती है।

अंत में, उद्यमिता शिक्षा केवल एक नीतिगत मुद्दा नहीं है, यह एक सांस्कृतिक बदलाव की माँग है। और यह बदलाव कक्षाओं से शुरू होता है उन शिक्षकों से जो छात्रों को 'क्या सोचना है' नहीं बल्कि 'कैसे सोचना है' सिखाते हैं।

**संदर्भ ग्रंथ सूची :–**

1. Bhat, S., & Raina, S. K. (2019). Entrepreneurship education in premier Indian institutions: Practices and outcomes. *Journal of Entrepreneurship Education, 22*(3), 1–18.
2. Drucker, P. F. (1985). *Innovation and entrepreneurship: Practice and principles*. Harper & Row.
3. Fayolle, A., & Gailly, B. (2008). From craft to science: Teaching models and learning processes in entrepreneurship education. *Journal of European Industrial Training, 32*(7), 569–593.
4. Gibb, A. (2002). In pursuit of a new `enterprise' and `entrepreneurship' paradigm for learning. *International Journal of Management Reviews, 4*(3), 233–269.
5. Kuratko, D. F. (2005). The emergence of entrepreneurship education: Development, trends, and challenges. *Entrepreneurship Theory and Practice, 29*(5), 577–597.
6. Ministry of Education. (2020). *National Education Policy 2020*. Government of India.
7. NASSCOM. (2023). *India startup ecosystem report 2023*. NASSCOM Foundation.
8. Neck, H. M., & Greene, P. G. (2011). Entrepreneurship education: Known worlds and new frontiers. *Journal of Small Business Management, 49*(1), 55–70.
9. Sharma, L., & Madan, P. (2022). Entrepreneurial intentions among university students in India: A study of state universities. *Indian Journal of Commerce and Management Studies, 13*(1), 34–47.
10. Sinha, A. (2021). Startup India initiative: Policy analysis and ground reality. *Economic and Political Weekly, 56*(14), 42–51.
11. Timmons, J. A., & Spinelli, S. (2007). *New venture creation: Entrepreneurship for the 21st century* (7th ed.). McGraw-Hill.
12. University Grants Commission. (2022). *Guidelines on implementation of entrepreneurship education in higher educational institutions*. UGC.
13. Verma, R., & Singh, P. (2021). Bharatiya uchch shiksha mein udyamita: Avsar, badhayein aur sambhavnayein. *Bharatiya Uchch Shiksha Patrika, 7*(2), 55–72.
14. Vesper, K. H., & Gartner, W. B. (1997). Measuring progress in entrepreneurship education. *Journal of Business Venturing, 12*(5), 403–421.
15. World Economic Forum. (2023). *Future of jobs report 2023*.

**********